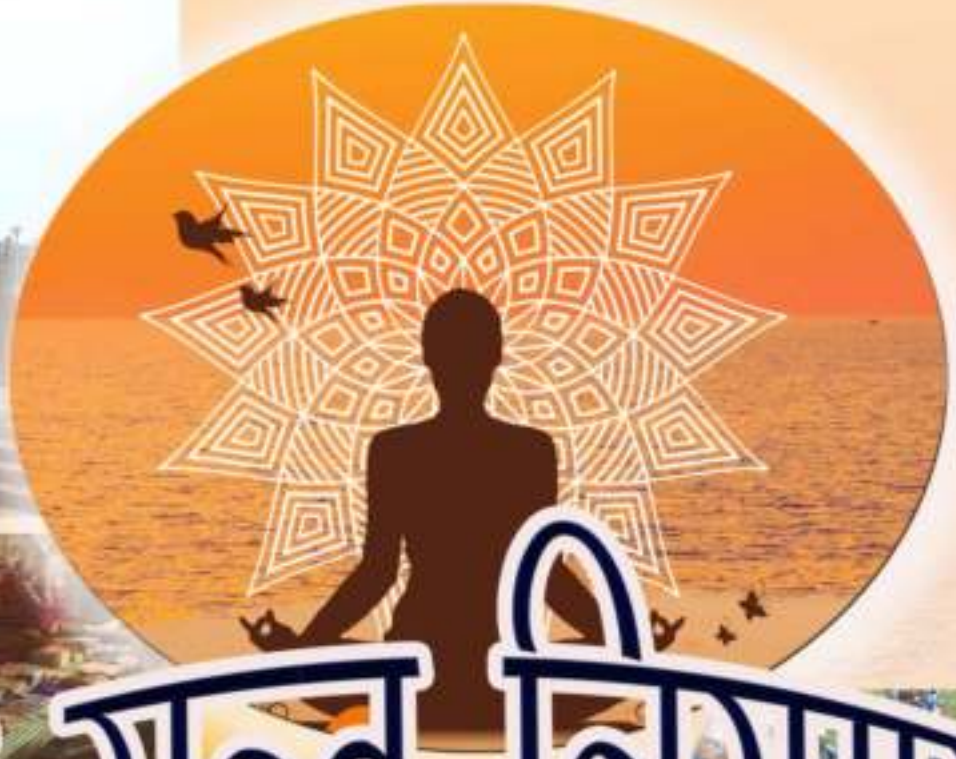

सर्वे सन्तु निरामयाः

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी

केन्द्र समाचार - २०१९-२०२०

सर्वे सन्तु निरामया:

"शक्ति ही उत्साह का प्रतीक, जीवन का प्रतीक, आशा और स्वास्थ्य का संकेत और जो भी सकारात्मक है उसका प्रतीक है। जब तक शरीर है तब तक शरीर में शक्ति होना चाहिये, मन में शक्ति होना चाहिये, हाथों में शक्ति होना चाहिये"

अनुक्रमणिका

सर्वे सन्तु निरामया: 3

शिक्षा 14

स्वास्थ्य 17

ग्रामीण और जनजातीय कल्याण गतिविधियां और कौशल विकास प्रकल्प 18

अरुण ज्योति – अरुणाचल प्रदेश 19

विवेकानन्द केन्द्र प्रशिक्षण व सेवा प्रकल्प 19

ग्रामीण विकास कार्यक्रम 20

प्राकृतिक संसाधन विकास प्रकल्प 21

ओडिशा सेवा प्रकल्प – ओडिशा 21

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी में भारत के राष्ट्रपति 22

प्रकाशन – साहित्य सेवा 25

विवेकानन्द केन्द्र – संस्थान एवं शोध संस्थान 27

विवेकानन्द केन्द्र की कार्यपद्धति – चार आयाम 29

उत्सव – गुरु पूर्णिमा 30

उत्सव –विश्व बंधुत्व दिन 31

उत्सव – साधना दिवस 32

उत्सव – गीता जयन्ती 32

उत्सव – समर्थ भारत पर्व – विवेकानन्द जयन्ती 33

विके ऐक्यम् (VK AICYAM), भुवनेश्वर का उद्घाटन 34

एक भारत - विजयी भारत 35

भारत के प्रधानमंत्री - 1 मार्च, 2019 को 38

रामायण दर्शनम्' विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में 38

विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संस्थान 39

द्वारा मंगोलिया में संवाद III का आयोजन किया गया। 39

पुरस्कार और उपलब्धियां 40

श्रद्धांजलि - सेवा और समर्पण के लिए जिन्होंने जीवन जिया, और संसार को उत्तम बनाने के लिए अपना योगदान दिया। 41

विवेकानन्द केन्द्र मुख्यालय, विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी 42

विवेकानन्द शिला स्मारक के अति विशिष्ट दर्शनार्थी 43

महासचिव की ओर से - 44

विवेकानन्द केन्द्र सोशल मिडिया में 45

आपका योगदान महत्वपूर्ण है - 46

https://www.vrmvk.org/vks2020

सर्वे सन्तु निरामया:

- निवेदिता भिड़े,
उपध्यक्षा,
विवेकानन्द केन्द्र **कन्याकुमारी**

समग्र विश्व कुछ समय से एक अभूतपूर्व परिस्थिति से गुजर रहा है। कोविड-19 ने अलग-अलग स्तरों पर हमें अनेक पाठ पढ़ाए हैं। मनुष्य को अपने अन्दर झाँकने और समूचे जीवन के प्रति सोचने पर विवश किया है तथा जीवन-पद्धति में सुधार की आवश्यकता का बोध कराया है। आरम्भ में ऐसे लग रहा था कि कोविड-19 के कारण बनी यह परिस्थिति कुछ सप्ताहों की ही बात होगी। परन्तु परिस्थिति अत्यन्त गम्भीर बन गई और मनुष्य को, प्रथम पाठ नम्रता का पढ़ना पड़ा। एक छोटे से जीव ने मानव समाज को रुक जाने के लिए बाध्य कर दिया। मनुष्य अपने अज्ञान के कारण गर्वोक्ति करता है। परन्तु उसका नियोजन थोड़े ही समय में ध्वस्त हो सकता है। दूसरी बात यह है कि उसने समझ लिया कि वास्तव में इस सुन्दर वसुंधरा की समस्या - या फिर ऐसा कहें कि वायरस - वह स्वयं ही है। जैसे ही उसने स्वयं को घर में बंद कर लिया वैसे ही सुन्दर-सुन्दर पक्षी इधर-उधर दिखाई देने लगे, जंगलों के आस-पास वाले रास्तों पर हिरण आदि पशु विहार करने लगे, नदियों का जल शुद्ध हो गया तथा उसमें राजहंस तैरते हुए दिखाई देने लगे। ऐसा लगता है कि मनुष्य को अपने घर में बंद कर पृथ्वी माता अपने घावों को भरते हुए स्वस्थ हो रही है।

पता नहीं और कितने समय तक यह संक्रामक रोग की काली छाया अपने जीवन में रहेगी। परन्तु बार-बार जो प्रार्थना सबके मन में प्रकट हो रही है वह है सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः...- सभी सुखी हों , सभी स्वस्थ हों ...'। सदियों से भारत की यह प्रार्थना रही है। यह प्रार्थना किसी विशेष वर्ग तक सीमित नहीं है। यह केवल मानव जाति के लिए भी सीमित नहीं है, यह तो सम्पूर्ण चराचर सृष्टि

के लिए है। यह विश्व का एकमात्र देश है जहाँ विश्व को ईश्वर की अभिव्यक्ति माना गया है, हर जीव में दिव्यत्व देखा गया है, यही एकमात्र देश है जो विश्व के प्रत्येक वस्तु में परस्पर जुड़ाव, परस्पर सम्बन्ध तथा परस्परालम्बन को देखने के कारण ही ऐसी प्रार्थना कर सकता है। इतना ही नहीं, यह केवल इच्छा मात्र नहीं है, तो

भारतवर्ष ने ऐसी संस्कृति को विकसित किया है जिसमें सभी "निरामय" हो सकते हैं। कोविड-19 के इस कालखण्ड में अनेकों ने भारत के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के मूल्य को समझा है। भारतीय परम्पराएं काल की कसौटी पर खरी उतरी हैं। वर्तमान परिस्थिति अपनी स्वास्थ्य की संकल्पना को जाँचने के लिए सही सन्दर्भ प्रदान करती है। भारतीय सभ्यता एक अत्यन्त पुरातन सभ्यता है। सांस्कृतिक भारत वर्तमान शासकीय भारत से कई गुना बड़ा है। सदियों से यह बहुत बड़ा भूभाग रहा है। यह तो अत्यन्त स्वाभाविक है कि इसने अनेक व्याधियों, संक्रामक रोगों एवं विश्वव्यापी महामारियों का सामना किया होगा। सहस्रों वर्षों के अनुभव के कारण भारत ने अवश्य ही स्वास्थ्य के लिए हितकर जीवन-पद्धति को अपनाया होगा ताकि संक्रमण फैलने से रुके और परिस्थिति नियन्त्रित हो जाए। कोविड-19 के इस काल में, ऐसी अनेक पद्धतियाँ उभर कर सामने आयीं हैं, जैसे – नमस्ते कहकर अभिवादन करना, भोजन के पूर्व हाथ, पैर धोना, बाहर जाते हुए पहने कपड़े घर आने पर बदलना, घर के अन्दर चप्पल या जूते न पहनना, अनावश्यक रूप में अपने या दूसरों के चेहरे को न छूना इत्यादि। इन पद्धतियों का महत्त्व एवं प्रयोजन अब असानी से समझ में आ रहा है। आज भले ही भारत कोविड-19 की कुल संख्या में

विश्व में दूसरे नम्बर पर होगा, परन्तु जनसंख्या की तुलना में यह बहुत कम है। मृत्यु दर भी दूसरे अनेक देशों की तुलना में बहुत कम है। कम सुविधाएं या फिर सुविधाओं के अभाव में भी हमने परिस्थिति पर जो नियन्त्रण पाया है उसका कारण अपनी परम्पराओं का पालन ही रहा है।

केवल यह रीति-रिवाज ही नहीं, अपने पास एक सम्पूर्ण विज्ञान भी है जो आयुर्वेद के नाम से जाना जाता है। वास्तविक रूप में विज्ञान से भी कुछ अधिक है, यह शास्त्र है। शास्त्र विज्ञान से दो प्रकार से अलग है। विज्ञान केवल प्रयोग, अवलोकन तथा अनुमानों के आधार पर प्राप्त तथ्यों को सामने रखता है। परन्तु जब अधिक जानकारी या फिर कुछ अद्भुत घटना जिसे वह सिद्धान्त स्पष्ट नहीं

कर पा रहा हो- सामने आ जाते हैं, तब वैज्ञानिक तथ्यों का अगला समूह सामने रख दिया जाता है। अतः विज्ञान में सिद्धान्त बदलते रहते हैं। शास्त्र भी तथ्यों को जानने के लिए अपनी वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुसरण करता है, परन्तु सत्य के रूप में स्वीकार करने से पूर्व पीढ़ियों तक उनकी कड़ी परीक्षा की जाती है। विज्ञान सिद्धान्तों के आधार पर तकनीक विकसित कर सकता है, किन्तु मानव के आचरण के प्रति कुछ नहीं बताता। इस प्रकार से, बाह्य विकास तो होता है, तकनीकी शक्ति मनुष्य को प्राप्त होती है, परन्तु विवेकपूर्ण रूप से उसका उपयोग मानवता की भलाई के लिए करने हेतु आवश्यक आंतरिक अनुशासन नहीं सिखा जाता। शास्त्र तत्वों के साथ-साथ जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, यह भी अधोरेखित करता है।

अतः, प्रथमतः आयुर्वेद स्वस्थ जीवन जीने का एक शास्त्र है। रोगों की चिकित्सा करना दूसरे क्रम पर आता है। आयुर्वेदीय शास्त्र ग्रन्थों में स्वस्थ रहने के लिए कैसे जीना है इसका विवरण दिया गया है। जैसे श्री वाग्भट्टाचार्य ने अष्टांगहृदयम् में परिचयात्मक अध्यायों के पश्चात स्वस्थ जीवन के लिए दिनचर्या, अपने आहार, निद्रा, काम-काज, व्यायाम आदि में ऋतु अनुसार आवश्यक बदलाव, रोगग्रस्त न हो इसलिए अपनाने योग्य उपाय, इन सबकी चर्चा की है।

लिखित प्रमाणों एवं उपलब्ध साहित्य के अलावा अपने विभिन्न समुदायों में सन्क्रामक रोगों से लेकर सारे रोगों की रोक-थाम कर उनको नियन्त्रित करनेवाली ऐसी अनेक आचरण पद्धतियाँ हैं जिनका परम्परागत रूप से पालन होता आ रहा है।

आयुर्वेद साहित्य से ये आचरण पद्धतियाँ प्रमाणित होतीं हैं। महामारी के चलते प्रत्येक समुदाय की अपनी पूजाएँ होती हैं जिसमें संक्रमण को फैलने से रोकनेवाली हल्दी, नीम के पत्ते तथा अद्रक जैसे अनेक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। मुख्यतः ये पूजाएँ सामूहिक रूप से की जातीं हैं और उनमें ढोल तथा नगाड़ों का उपयोग किया जाता है। आयुर्वेदीय शास्त्रों में एक अनोखा सन्दर्भ पाया जाता है जिसके अनुसार यदि दुन्दुभी नामक वाद्य को कुछ औषधियों का लेपन करके बजाया जाए तो मानव के लिए हानिकारक सूक्ष्म जन्तु नष्ट हो जाते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से अन्वेषण करने पर यह विषय उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। कुछ विशेष पूजाओं के पश्चात अनेक गाँव बाहरी लोगों के लिए बन्द

किये जाते हैं; न बाहरी लोग अन्दर आ सकते हैं न ही गाँव के लोग बाहर जा सकते हैं। यही आधुनिक क्वारंटाइन पद्धति है। ऐसी अनेक पद्धतियाँ अपने ग्रामीण समुदायों और जन-जातियों ने सम्भाल कर रखी है जिनका पालन शहरों में नहीं दिखाई देता। इन पद्धतियों के पीछे छिपा विज्ञान जानने के लिए उनका अध्ययन होना चहिए।

रोगी यदि पहले ही अस्वस्थ है तो कोरोना विषाणु अधिक उग्र बन जाता है। इसलिए अनेक लोग अपना ध्यान रखने लगे हैं। नियमित व्यायाम, ध्यान एवं घरेलू भोजन से स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। उपलब्ध समय भी रचनात्मक कार्यों में लगाया जा रहा है। लॉकडाउन का समय एक वरदान के रूप में परिवर्तित हुआ है। परन्तु जो आन्तरिक रूप से सुदृढ़ नहीं थे वे अपने ही घर में बन्दी होने की अनिवार्यता से टूट गए क्योंकि आन्तरिक शक्ति को विकसित करने का महत्त्व उन्होंने कभी समझा नहीं। आयुर्वेद का कथन है कि कफ, पित्त तथा वात ये शरीर के दोष हैं और मन के

दोष हैं रज एवं तम। मानसिक दोष अनियंत्रित हो जाने पर भी मनुष्य रोगों से त्रस्त हो सकता है। दो प्रकार के रोग बताये गए हैं – 1) निज ; 2) आगन्तु। निज रोग अन्दर से ही होते हैं, जैसे- मधुमेह, उच्च रक्तचाप आदि। आगन्तु बाहरी 'भूतों' से होता है। यहाँ 'भूत' शब्द प्रेतात्मा के अर्थ से उपयोग में नहीं लाया गया है। उसकी परिभाषा **'मनुष्योपद्रवकारिण: सूक्ष्मा: गणवशेषा: भूत:।'**

– मानव को हानि पहुँचाने वाले सूक्ष्म जीव-जन्तु – इस प्रकार से की गई है। मन और शरीर यदि असन्तुलित हो जाते हैं तो आगन्तु विध्वंस कर सकता है। दोनों प्रकार के रोगों को नियंत्रण में रखने के लिए हमें मानसिक तथा शारीरिक दोषों को नियंत्रित करते हुए स्वास्थ्य कर जीवन-पद्धति का अवलम्ब करना होगा।

मन के दोषों को कैसे दूर करें? अष्टांग हृदयम् में स्वस्थ जीवन हेतु दिनचर्या के सन्दर्भ में वागभट्टाचार्य 11 श्लोकों में अपना कर्म और अपनी मानसिकता कैसी होनी चाहिए, यह बताते हैं। एक बार एक ईसाई नन ने मुझे पूछा, "जैसे हमारे ईसाई मत में 10 कमांडमेंट्स है वैसे आप हिन्दुओं में कुछ आचरण के नियम है?" मैंने बताया, "निश्चित रूप से प्रत्येक ग्रन्थ में साधना का भाग होता है।" उन्होंने पूछा, "उदाहरण के रूप में आप कुछ बता पाएगीं?" मैंने उनको गीता और यम-नियमों के बारे में बताया। उनको ऐसे बताया गया था कि हिन्दू धर्म में कोई नीति-मूल्य सिखाया नहीं जाता इसलिए वे मेरी बात सुनकर दंग रह गई। अपने स्वास्थ्य के सन्दर्भ में लिखे गए ग्रन्थों में भी अपने दूसरों के प्रति अपेक्षित आचरण को अधोरेखित करते हैं। क्रमांक 20 से लेकर 30 तक जो 11 श्लोक हैं, उनमें निम्नलिखित परामर्श दिया गया है।

सुख सभी चाहते हैं किन्तु सच्चे सुख की प्राप्ति तो धर्म के पालन से ही होती है इसलिए धर्म का आचरण करना चाहिए। जो आपकी भलाई चाहते हैं, उनकी बात माननी चाहिए। **'आत्मवत् सततं पश्येत् अपि कीटपिपीलिकाम्'** - कीटकों और चींटियों के प्रति भी एकात्मता की दृष्टि रखनी है। हिंसा, चोरी, गलत कर्म, अफवाहें, कटु वचन, झूठ बोलना, ढोंग करना, किसी की हत्या का नियोजन करना, दूसरों का धन चुराना, इन सब बातों से बचना चाहिए।

शास्त्र-वचन के अनुसार सबसे व्यवहार करना है। निर्धन, दु:खी तथा पीड़ितों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। सदैव देवता, गोमाता, ब्राह्मण, ज्येष्ठ व्यक्ति, वैद्य, राजा तथा अतिथि का सम्मान करना चाहिए। सबका भला करो परन्तु दूसरों के कठोर व्यवहार की ओर ध्यान न दो। सम्पन्नता हो या कठिनाई दोनों परिस्थितियों में भी समभाव रखो। ऐसी परिस्थिति के कारण ढूँढ़ने का प्रयास करो किन्तु परिस्थिति को टालने का प्रयास मत करो।

बोलते हुए सही समय पर, कम शब्दों में (मितम्), और उपयोगी (हितम्) बात करो।

प्रेम से बात करो। स्वयं आगे आकर (पूर्वभाषी) सबसे संतोष, करुणा और मृदुता से बोलो।

केवल स्वयं के लिए ही आनन्द की इच्छा मत करो। सब पर विश्वास मत करो; सब पर अविश्वास भी मत करो। स्वयं किसी से शत्रुता न करो; न ही दूसरों को अपना शत्रु समझो। आपका अपमान करनेवालों के बारे में तथा ज्येष्ठ, मित्र और यजमान से स्नेह न मिलने पर दूसरों से चर्चा मत करो। सामनेवाले व्यक्ति के उद्देश्य को समझकर उसके साथ व्यवहार करो और उसे सन्तुष्ट करो; ऐसे लोगों को पराधन पण्डित कहा जाता है। न इन्द्रियों को पीड़ा दो, न विलास में डूब जाओ। अतिरेक मत करो। जीवन में सदैव सन्तुलन बनाए रखो। सर्वधर्मेषु मध्यमाम्।

स्वास्थ्य बनाये रखने का एक सकारात्मक कारण है। हमारा जन्म बिना किसी प्रयोजन से नहीं हुआ है; न ही कोई दुर्घटना है। प्रत्येक जीवन का कुछ उद्देश्य है। स्वास्थ्य को महत्त्व दिया गया है क्योंकि शरीर समष्टि के प्रति अर्थात परिवार, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति अपने कर्तव्य पूर्ति का प्राथमिक साधन है। **शरीरमाद्यम् खलु धर्मसाधनम्।** स्वास्थ्य की संकल्पना व्यक्ति आधारित नहीं अपितु समुदाय आधारित है क्योंकि हमारा शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य परिवेश से जुड़ा हुआ है। अत: विश्वभर में अनेक सामुदायिक तथा जनजातीय परम्पराओं में ऐसा देखा जाता है कि एक व्यक्ति के अस्वस्थ होने पर भी सारा समुदाय/जनजाति उसको ठीक करने के लिए पूजा में सहभागी होता है। हमने देखा है कि रोग का कारण भले ही बाहर हो परन्तु मन की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है। सारा समुदाय पूजा में सहभागी होने के लिए एकत्रित होता है जिसमें औषधि वनस्पतियों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार से सबका साथ और उनकी अपनापन रोगी के मन को पक्का बना देता है।

सारा विश्व परस्पर जुड़ा हुआ, परस्पर सम्बन्धित तथा परस्परावलम्बी होने के कारण सबके स्वास्थ्य के लिए काम करना, सबके लिए प्रार्थना करना स्वाभाविक हो जाता है। अनेकों ने इस महामारी में एकात्म भाव और एक दूसरे के प्रति आस्था का अनुभव किया। यह अत्यन्त संक्रामक रोग होने पर भी हजारों लोगों ने जाँच, उपचार, अन्नदान तथा अन्तिम संस्कार करने में अपना

सहभाग दिया। यदि हजारों लोगों की इन सेवाओं का योग्य प्रलेखन (डॉक्यूमेंटेशन) किया गया, तो यह ज्ञात होगा कि स्वयं का जीवन संकट में डालकर कोरोना रोगी की सेवा का कार्य करनेवाले लोगों की संख्या भारत में सर्वाधिक है। मन को छूनेवाले अनेक अनुभव अनेकों को हुए जो कि अपनी समाज की आन्तरिक शक्ति तथा एकात्मभाव का द्योतक है। अत्यन्त निर्धन व्यक्ति भी उसको दिया हुआ अतिरिक्त अन्न-धान्य वापस लौटाता है यह कहकर कि उसके पास एक सप्ताह के लिए पर्याप्त अन्न-धान्य है और किसी और गरीब को, वह दिया जा सकता है। यदि यह सहानुभूति, एकात्मता और करुणा का अनुभव हो तो सेवा का उच्चतम उद्देश्य सिद्ध होता

है। हम दूसरों की सहायता क्यों करते हैं? क्योंकि वह कोई 'दूसरा' नहीं है अपितु सब में व्याप्त परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। अतः, दूसरों की सेवा अपने आन्तरिक विकास तथा चित्तशुद्धि में सहायक सिद्ध होती है। जब तक अपना मन रज और तम से उत्पन्न होनेवाले क्रोध, द्वेष, लोभ, आलस, आसक्ति आदि से मुक्त नहीं होता; जब तक हम शारीरिक तथा मानसिक दोषों से पूर्णतया मुक्त नहीं होते, तब तक हम अपने शरीर और मन को समष्टि के प्रति अपने दायित्व को निभाने में नहीं लगा सकते। या फिर ऐसा भी कहा जा सकता है कि जब तक हम दूसरों की निरपेक्ष भाव से सेवा नहीं करते तब तक मन शुद्ध नहीं होता।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' यह प्रार्थना केवल स्वयं के लिए नहीं, केवल मानवता के लिए भी नहीं अपितु सबके लिए है। परस्पर सम्बन्धित जगत में दूसरों का स्वास्थ्य, उनकी जीवन-पद्धति, व्यवहार, आहार आदि भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता है तो प्रतिघात तो अवश्य होगा। यह महामारी परस्पर सम्बन्ध एवं परस्परावलम्बी-तत्व इस विवेक-दृष्टि को अधोरेखित करती है और इसीलिए संयम और आस्था से युक्त जीवन आवश्यक है। लालच के कारण मनुष्य अधिक से अधिक जुटाने में लगा है। लालच मनुष्य पर हावी होकर उसे स्वार्थी और व्यक्तिवादी बना रहा है। कम संसाधनों में हम जीवन-यापन कर सकते हैं, इस कोरोना काल की सच्चाई को यदि हम समझते हैं तो मन के इस दोष – लालच को ठीक से समझकर उसे दूर किया जा सकता है। हम कुछ अनावश्यक बातों पर अधिक पैसा खर्च कर रहे थे जैसे होटलों खाना आदि। यदि हम कोरोना काल (जो अभी समाप्त नहीं हुआ है) से सही में कुछ पाठ पढ़ते हैं तो हमने जो जीवन और धन खोया है, जो कष्ट सहे हैं वे व्यर्थ नहीं होंगे।

एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात हमें समझनी होगी। 'निरामय' होने की प्रार्थना सबके लिए है। निरामय अर्थात **निर्गतः आमयो यस्मत सः।** रोग से ठीक होना। आमय का अर्थ है रोग, व्याधि या पीड़ा। विशेष बात यह है कि भगवान विष्णुजी और शिवजी के नाम हैं अनामय! आदि शंकराचार्य विष्णुसहस्रनाम पर लिखे अपने भाष्य में अनामय का अर्थ **'आन्तर्बाह्यैर व्याधिभिः कर्मजैर न पीड्यत इति अनामय'** इस प्रकार से बताते हैं। जो अपने कर्मों के कारण बाहर (आगन्तु) या अन्दर (निज) से बाधित नहीं होता वह अनामय। अमरकोष 'जहाँ दुःख नहीं केवल स्वास्थ्य/सुख है' इस प्रकार से परिभाषित करता है। सारे दुःखों के कारण हमारे इस जन्म के या पूर्व जन्म के कर्म ही हैं। यदि हम अपने कर्म ठीक से करते हैं, जब शारीरिक तथा मानसिक दुःख, पीड़ा दूर हो जाते हैं तब हम निरामय होते हैं। मनुष्य का प्रवास निरामय – व्याधियों से ठीक होना- से अनामय – कभी व्याधिग्रस्त न होना - तक होना चाहिए।

इस प्रवास के लिए भगवत गीता हमारा मार्गदर्शन करती है। योग्य कर्म करो – **कार्यं कर्म समाचर** – परन्तु कर्मफल का त्याग करो।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम॥ 2.51॥

ज्ञानी पुरुष अपनी बुद्धि तथा इच्छा, ईश्वर से जोड़ कर कर्मफल का त्याग करते हुए जन्मबन्ध से मुक्त होकर वे दुःख के परे पहुँच जाते हैं। यही मनुष्य जन्म का उद्देश्य है। वहाँ पहुँचने के लिए अपने प्रयास, अपनी सेवा, अपना कार्य सतत चलते रहना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में, हमें सेवा के विभिन्न मार्ग चुनने पड़ेंगे, परन्तु कार्य रुकना नहीं चाहिए। इस परिस्थिति में **'सर्वे सन्तु निरमयाः'** यह प्रार्थना तथा उसके अनुसार व्यवहार – कर्मफल के प्रति आसक्ति के बिना सेवा - सतत चलते रहना चाहिए।

- मूल अंग्रेजी,

अनुवाद : प्रियम्वदा पांडे,
जीवनव्रती कार्यकर्ता,
विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी

पी. परमेश्वरनजी दिव्यत्व की ओर

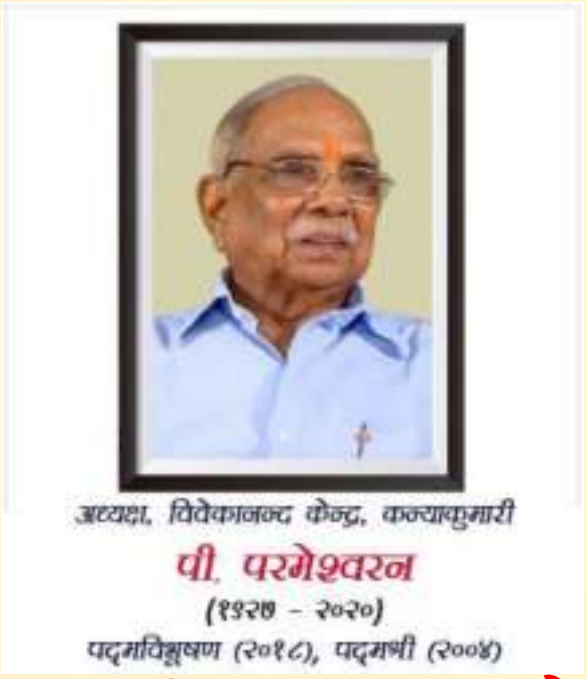

श्वेत वस्त्रधारी संत - परमेश्वरनजी

- एस. गुरुमूर्ति

परमेश्वरनजी को जानना उन बाहर के लोगों के लिए जरूरी है, जो उन्हें कम जानते हैं। वह श्वेत वस्त्रधारी एक संत थे। ...परमेश्वरनजी का निधन केरल के सार्वजनिक जीवन से एक महापुरुष का महाप्रयाण है। केरल, जो अपने आध्यात्मिक मूल से दूर चला गया है और बहुत लंबे समय तक अनिर्दिष्ट भौतिकवाद से लिप्त रहा, उसे अपने बेहतर भविष्य के लिए परमेश्वरनजी को सदैव स्मरण रखने की आवश्यकता है।

अनगिनत प्रशंसकों के श्रद्धास्थान परमेश्वरनजी, अब नहीं रहे। पी. परमेश्वरनजी, केवल 23 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने और अपनी अंतिम सांस तक लगातार सत्तर वर्ष कार्यरत रहे, उनके जीवन में केवल एक

https://www.vrmvk.org/vks202

मिशन था और वह था राष्ट्रदेव भारतमाता की अर्चना। संगठन का कार्य तो किया ही, किन्तु दशकों पहले तिरुवनंतपुरम् स्थित भारतीय विचार केन्द्रम् के रूप में उनकी विलक्षण बौद्धिक क्षमता प्रगट हुई, जिसके माध्यम से वे केरल की अन्य आध्यात्मिक विभूतियों को भी सामने लेकर आए। अपने निधन तक उन्होंने विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी के कार्य का लगातार 25 वर्ष मार्गदर्शन और प्रसार किया, जिसके कारण अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, असम, मणिपुर, मेघालय और अंडमान द्वीप समूह के उपेक्षित और वंचित सामान्यजन की सेवा सम्पन्न हो रही है। वे लगभग एक शताब्दी तक ऐसे द्रष्टा बने रहे, जो अपने जीवन और समय से परे देखने की क्षमता रखते थे, और वही दशकों तक उनके उद्बोधन और लेखन में प्रतिबिंबित होता रहा, जिसमें अपने से असहमत होने वालों, यहाँ तक कि अपमान करने वालों के प्रति भी सम्मान रहता था। निसंदेह वे केरल की बौद्धिकता के जीवंत प्रतीक थे।

बहु-आयामी व्यक्तित्व

वह एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे। एक विलक्षण पाठक, जिन्होंने अपनी मातृभाषा और अंग्रेजी में हजारों पृष्ठ पढ़े होंगे। एक उर्वर लेखक, जिन्होंने मलयालम और अंग्रेजी में 20 से अधिक पुस्तकें लिखीं। एक पत्रकार के रूप में, उन्होंने दशकों तक लेखन कार्य किया, विशेष रूप से विवेकानन्द केन्द्र की पत्रिका युवा भारती के लिए, जिसके वे सम्पादक रहे। वह अंग्रेजी और मलयालम दोनों के एक प्रभावी वक्ता थे। उनका उद्बोधन श्रोताओं की प्रशंसा पाने हेतु नहीं, बल्कि उनकी जानकारी बढ़ाने की दृष्टि से होता था।

वह एक असाधारण, मौलिक विचारक थे। उन्हें भारत में प्रचलित सामान्य बोलचाल की भाषा में गलत ढंग से एक 'दक्षिणपंथी' विचारक के रूप में माना जाता रहा, जो पश्चिमी शब्दकोश का विभाजनकारी लेबल है। आज जब परमेश्वरनजी सशरीर नहीं है, तब उनके व्यक्तिगत विवरण नहीं, बल्कि उनकी उस सामाजिक सोच को स्मरण करना चाहिए, जिसके लिए उन्होंने केरल में सबसे कठिन समय में कार्य किया है।

नेहरू ने छोड़ दिया, परमेश्वरनजी ने नहीं छोड़ा

परमेश्वरनजी ने वाम-प्रभुत्व वाले केरल में आरएसएस के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में, जिस राष्ट्रवादी मिशन को अपने जीवन मिशन के रूप में अपनाया था, उस पर वे अविचल चलते रहे। यह हिन्दू राष्ट्रवाद का वही विचार था, जो एक शताब्दी पूर्व स्वामी विवेकानन्द के विचारों में दृष्टिगोचर होता है और जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से उत्प्रेरित भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महर्षि अरविन्दो, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और राजाजी सहित अन्य नेताओं ने भी उसी विचार को स्वीकार किया था।अपने पूरे जीवन के दौरान, परमेश्वरनजी ने स्वामी विवेकानन्द के हिन्दू राष्ट्रवाद की अवधारणा को ही उजागर किया, जिसे जवाहरलाल नेहरू ने भी 1930 के दशक के मध्य में पूरी तरह से स्वीकारा था, जो कि अधिकांश तथाकथित धर्मनिरपेक्ष विद्वानों को पता ही नहीं है, या जिसे जानने के बावजूद वे उस पर चर्चा नहीं करना चाहते।नेहरू ने लिखा था, "रामकृष्ण के एक प्रसिद्ध शिष्य स्वामी विवेकानन्द थे, जिन्होंने बहुत ही शानदार और जबर्दस्त ढंग से राष्ट्रवाद का प्रचार किया..... विवेकानन्द का राष्ट्रवाद हिन्दू राष्ट्रवाद था, और इसकी जड़ें हिन्दू धर्म और संस्कृति में थीं। यह किसी भी तरह से मुस्लिम विरोधी या किसी और के विरोध में नहीं था ..."(जवाहरलालनेहरू, विश्व इतिहास की झलक, पेंगुइनबुक्स नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 437) स्वतंत्रता के बाद, हालांकि नेहरूविवेकानन्द के उस राष्ट्रवाद से दूर चले गए लेकिन परमेश्वरनजी नहीं।

विवेकानन्द को त्यागने वाले नेहरू को धर्मनिरपेक्ष के रूप में मान्य किया गया और परमेश्वरनजी जैसे विवेकानन्द को मानने वालों को गैर-धर्मनिरपेक्ष करार दिया गया। परमेश्वरनजी के विचारों को अंततः 1995 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए हिंदुत्व के फैसले ने भी पुष्ट किया। अदालत ने कहा कि 'हिन्दू', 'हिन्दुत्व' और 'हिन्दुइज्म' शब्दों

को धर्म की संकीर्ण सीमा में नहीं बाँधा जा सकता, यह तो भारतीय संस्कृति और विरासत को दर्शाते हैं, साथ ही यह भी जोड़ा कि हिन्दुत्व इस उप-महाद्वीप में लोगों के जीवन जीने का तरीका है। एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में भारत का यही वह विचार है जिसके लिए परमेश्वरनजी जीवन भर लड़े और जिए। धर्मनिरपेक्ष दलों ने भी हिन्दुत्व के इस फैसले की समीक्षा के लिए 20 साल तक संघर्ष किया, लेकिन, 2016 में सुप्रीम कोर्ट के सात-न्यायाधीशों की पीठ ने फैसला दिया कि हिन्दू धर्म जीवन जीने का एक तरीका है और भारत की संस्कृति और विरासत का प्रतीक है, न्यायायिक दृष्टिकोण से यह सही है। और समीक्षा नहीं की गई। मुख्यधारा के धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दल अभी भी इस निर्विवाद तथ्य को नहीं समझ पाए हैं, जिसका खुलासा भारत के विचार और पहचान के रूप में परमेश्वरनजी करते रहे और आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने भी जिसे स्वीकार कर लिया। परमेश्वरनजी, जिनकी जीवनभर कोई व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा नहीं रही, निश्चित ही उन्होंने अपनी आँखें बेहद संतुष्टि के साथ बंद की होगी, कि आखिर जिसके लिए उन्होंने दशकों तक काम किया, सुप्रीम कोर्ट ने भी उसे सही ठहराया।

वे न वामवादी थे न दक्षिणवादी

परमेश्वरनजी जिस भारतीय दर्शन को मानते थे, वह केवल आध्यात्मिक और भौतिक क्षेत्रों के बीच अंतर करता है। इस विचार में न कोई वामपंथी है, न कोई दक्षिणपंथी। किन्तु वामपंथी विचारकों की भूमि केरल में उन पर दक्षिणपंथी विचारक का औपचारिक लेबल चिपका दिया गया। केरल में जो भी वामपंथी नहीं है, उनकी परिभाषा के अनुसार वह दक्षिणपंथी है। परमेश्वरनजी उनकी नजर में रूढ़िवादी थे, इसे और स्पष्ट करें तो गैर धर्म-निरपेक्ष थे। यह स्वचालित लेबलिंग है, जो कि सच नहीं है, जिसने केरल के बौद्धिक जगत में परमेश्वरनजी की भूमिका को राजनीतिक शक्ति के कारण गलत रूप में बदल दिया। परमेश्वरनजी ने केरल के इस अप्रत्यक्ष बौद्धिकवाद की अवहेलना और विरोध किया। भारतीय विचार प्रणाली रूढ़िवाद और उदारवाद जैसे पश्चिमी भेद से इतर है, जिसे अन्य बौद्धिकों को समझने में अभी समय लगेगा।

पश्चिमी लेबल से क्या यह समझ में आ सकता है कि स्वामी

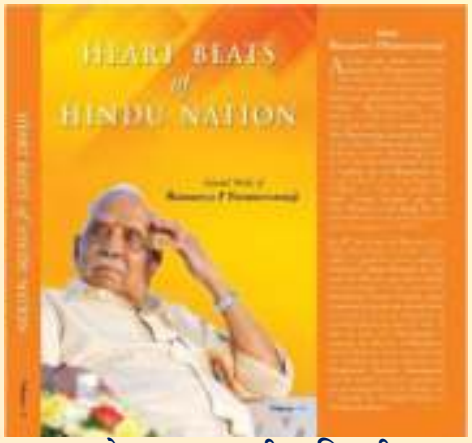

विवेकानन्द क्या थे, अध्यात्मवादी, रूढ़िवादी या उदारवादी। पश्चिमी भौतिकवादी वैचारिक लेबल परमेश्वरनजी जैसे अध्यात्म उन्मुख बुद्धिजीवियों को समझने के लिए अपर्याप्त हैं। उनकी सोच न तो वामपंथी थी, न ही दक्षिणपंथी, वे विशुद्ध राष्ट्रवादी थे। केवल राजनीतिक नजरिये वाले ही लोगों को वामपंथ या दक्षिणपंथ के रूप में देखते हैं। केरल के एक विचारक के रूप में उनकी क्षमता राजनीति से बहुत परे थी, जिसे एक अवास्तविक लेबल नहीं दर्शा सकता।

केरल में परमेश्वरनजी को स्मरण रखने की आवश्यकता है

पद्म पुरस्कारों जैसे पुरस्कारों से उन्हें देर से पहचान मिली। यद्यपि उन्हें किसी पुरस्कार की इच्छा नहीं थी, उन्होंने पुरस्कारों को योग्यता से जोड़ा, न कि दूसरे तरीके से। परमेश्वरनजी को जानना उन बाहर के लोगों के लिए जरूरी है, जो उन्हें कम जानते हैं। वह श्वेत वस्त्रधारी एक संत थे। यह वह आंतरिक संतत्व है, जिसने उन्हें 70 वर्षों तक बिना किसी अपेक्षा के सभी विघ्न-बाधाओं से जूझते हुए, अपने मिशन को सतत आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। पिछले पांच दशकों में जिन दिग्गजों ने समकालीन केरल को आकार दिया, उनमें से एक परमेश्वरनजी का निधन केरल के सार्वजनिक जीवन से एक महापुरुष का महाप्रयाण है। केरल, जो अपने आध्यात्मिक मूल से दूर चला गया है और बहुत लम्बे समय तक अनिर्दिष्ट भौतिकवाद से लिप्त रहा, उसे अपने बेहतर भविष्य के लिए परमेश्वरनजी को सदा याद रखने की आवश्यकता है।

- लेखक विवेकानन्द इंटरनेशनल फाउंडेशन (नई दिल्ली) के चेयरमैन हैं।

माननीय परमेश्वरनजी को श्रद्धांजलि

"श्री पी. परमेश्वरनजी भारतमाता के एक प्रतापी और समर्पित पुत्र थे। उनका जीवन भारत के सांस्कृतिक जागरण, आध्यात्मिक उन्नति और गरीब से गरीब जनता की सेवा करने के लिए समर्पित था। परमेश्वरनजी के विचार विराटमय और लेखन शैली उत्कृष्ट थी। वे अपने विचारों पर हमेशा अडिग रहनेवाले अदम्य साहस के धनी थे। परमेश्वरनजी ने भारतीय विचार केन्द्रम्, विवेकानन्द केन्द्र जैसे प्रख्यात संस्थानों का पोषण किया और यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे उनसे बातचीत करने के अविस्मरणीय क्षण प्राप्त हुए थे। उनके निधन से मैं अत्यंत दुखी हूं। ॐ शांति..."

'परमेश्वरनजी के निधन से बेहद दुखी हूं। वे एक बेहतरीन लेखक, कवि, अनुसंधानकर्ता और भारतीय विचार केन्द्रम् के संस्थापक एवं निदेशक थे। वे भारतीय विचार और दर्शन के मूर्त रूप थे। विवेकानन्द केन्द्रम् और भारतीय विचार केन्द्रम् के माध्यम से समाज के लिए उनका बहुत बड़ा योगदान अमूल्य था। वे इस भूमि के एक महान पुत्र हैं, जिनके विचार राष्ट्र को प्रेरित और मार्गदर्शन करते रहते हैं।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

"परमेश्वरनजी, एक स्वयंसेवक और प्रचारक के लिए आवश्यक गुणों के प्रतीक थे। उन्होंने शक्ति और चरित्र को प्रगट किया, वे ज्ञानी और योद्धा थे। वे एक विनम्र व्यक्ति, गीता उपदेश के जाग्रत आदर्श थे जिन्होंने इसके सार को समझा था।"

- सरसंघचालक मोहनजी भागवत

परमेश्वरनजी के निधन से बेहद दुखी हूं। वे एक बेहतरीन लेखक, कवि, अनुसंधानकर्ता और भारतीय विचार केन्द्रम् के संस्थापक एवं निदेशक थे। वे भारतीय विचार और दर्शन के मूर्त रूप थे। विवेकानन्द केन्द्रम् और भारतीय विचार केन्द्रम् के माध्यम से समाज के लिए उनका बहुत बड़ा योगदान अमूल्य था। वे इस भूमि के एक महान पुत्र हैं, जिनके विचार राष्ट्र को प्रेरित और मार्गदर्शन करते रहते हैं।

- उपराष्ट्रपति, एम. वेंकैया नायडू

"परमेश्वरनजी एक सिद्धांतवादी थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपनी राजनीतिक मान्यताओं को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिया।"

- पिनारयी विजयन, मुख्यमंत्री केरल

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी

अध्यात्म प्रेरित सेवा संगठन

माननीय एकनाथजी रानडे **- प्रेरक शक्ति**

विवेकानन्द शिला स्मारक का कार्य, ग्रेनाइट निर्मित स्मारक बन जाने भर से पूर्ण नहीं हुआ। उनका दृढ़ मत था कि जीवन को दिशा देनेवाले स्वामी विवेकानन्दजी के संदेश पूरे देश में प्रसारित होने चाहिए। इसलिए उन्होंने मांस-मज्जा युक्त एक स्मारक बनाने का निर्णय लिया। यही थी विवेकानन्द केन्द्र के गठन की पृष्ठभूमि – भारत के लिए पूर्णतः समर्पित भारत के नवयुवकों और युवतियों का सेवा संगठन, जो देश के आर्थिक रूप से पिछड़े और जनजातीय क्षेत्रों में सेवा गतिविधियों को संचालित करने हेतु प्रशिक्षित और नियुक्त हो। यही था स्वामी विवेकानन्द का स्वप्न, जिसे सत्य करना था।

विवेकानन्द केन्द्र की सभी सेवा कार्यों का केन्द्रीय विचार है –

'नर सेवा ही नारायण की पूजा है'।

सभी कार्यकर्ता ***'त्याग और सेवा'*** के राष्ट्रीय आदर्श से अनुप्राणित हैं और ***"मनुष्य निर्माण- राष्ट्र निर्माण"*** के द्विमुखी आदर्श के साथ देशभर में कार्यरत हैं।

विवेकानन्द केन्द्र का सेवा कार्य शिक्षा, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और स्वच्छता, प्राकृतिक संसाधन विकास, महिला और युवा सशक्तिकरण (शक्ति विकास) के क्षेत्र में शुरू है।

विवेकानन्द केन्द्र का कार्य अरुणाचल प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, बिहार-झारखंड, ओडिशा, तेलुगु, दक्षिण, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रान्त, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रान्त में गतिमान हैं।

विवेकानन्द केन्द्र का कार्य अरुणाचल प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, बिहार-झारखंड, ओडिशा, तेलुगु, दक्षिण, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रान्त, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रान्त में गतिमान हैं।

माननीय श्री ए. बालकृष्णनजी अपने नए अध्यक्ष

माननीय श्री ए.बालकृष्णनजी विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

19 जुलाई, 2020 को विवेकानन्द केन्द्र की प्रबंध समिति की बैठक में केन्द्र के पहले बैच के जीवनव्रती माननीय ए. बालकृष्णनजी को विवेकानन्द केन्द्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया। कुछ माह पहले केन्द्र के पूर्व अध्यक्ष माननीय पी. परमेश्वरनजी का वृद्धावस्था के चलते निधन हो गया, उनके पश्चात इस दायित्व में मा. बालकृष्णनजी हैं।

भारतीय वायुसेना से सेवानिवृत्ति के बाद बालकृष्णनजी विवेकानन्द केन्द्र के संस्थापक एकनाथजी रानडे के सम्पर्क में आए और स्वयं एकनाथजी द्वारा 1973 के पहले बैच में एक जीवनव्रती कार्यकर्ता के रूप में वे प्रशिक्षित हुए। प्रशिक्षण के बाद उत्तर-पूर्वांचल में क्षेत्रीय संगठक के रूप में नियुक्त किया गया था। वर्ष १९८१ से २००१ के दौरान उन्होंने केन्द्र के महासचिव के रूप में दायित्व सम्भाला। उनके नेतृत्व में ही विवेकानन्द केन्द्र ने वर्ष १९७७ में में अरुणाचल प्रदेश में आवासीय विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय शुरू किये। २००१ से उन्होंने विवेकानन्द केन्द्र के उपाध्यक्ष का दायित्व सम्भाला।

इससे पूर्व प्रो. पी. महादेवनजी - 1972-76, खुशीराम नेभराज उपाख्य प्रो. कमल नयन वासवानीजी- 1976-1978, माननीय एकनाथजी रानडे- 1978 से 1982, डॉ. एम. लक्ष्मी कुमारी दीदी- 1982 से 1995 तथा वर्ष – 1995 to 2020 श्री पी. परमेश्वरनजी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में दायित्व सम्भाला है।

श्री बालकृष्णनजी विवेकानन्द केन्द्र के छठवें अध्यक्ष हैं।

https://www.vrmvk.org

शिक्षा क्षेत्र में विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय और शैक्षिक महाविद्यालय एवं नर्सिंग महाविद्यालय

विद्यार्थी 33,996, शिक्षक 1641,

समाहित गांव 5767, लाभान्वित जनजातियाँ 49.

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय, भारत में
अरुणाचल प्रदेश - 40
असम - 24
नागालैंड- 1
अंदमान–निकोबार द्वीप समूह - 11
तमिलनाडु- 2
कर्नाटक - 1
पूरे भारत में कुल –79 विद्यालय

- विके कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन @ निर्जुली, अरुणाचल प्रदेश
- विके एनआरएल स्कूल ऑफ नर्सिंग, नुमालीगढ़, असम

https://www.vkv.in

https://www.vknrlnursingschool.

शिक्षा

भारतीय संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र को मजबूत बनाना।

- स्थानीय प्रार्थना गाने का अभ्यास।
- गैंगिंग, न्येदरनमलो, गोम्पा, रांगफ्रा मंदिर आदि के दर्शन।
- स्वदेशी त्यौहारों का उत्सव।
- भूमि पूजन स्वदेशी तरीके से।
- सत्रिया नृत्य, नाम कीर्तन, भावना का प्रचार।
- पारम्परिक वेशभूषा।

वि के वि बासर के विद्यार्थियों द्वारा पहने पारंपारिक वस्त्र

Indigenous Faith Day celebration @ VKV Balijan

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय (विकेवि) के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और आयोजनों में सहभागी होते हैं- यह शैक्षणिक या खेल उत्कृष्टता या पाठ्येतर गतिविधियों के लिए होता है। हमारे विद्यार्थी – जो कि भारत के भविष्य हैं – उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए विकेवि तत्पर है।

National Day at VKV Golaghat

https://www.vkvapt.org

चंद्रयान 2 की लैंडिंग के साक्षी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ कुमार लीगे बासार, विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय, ओयान का विद्यार्थी।

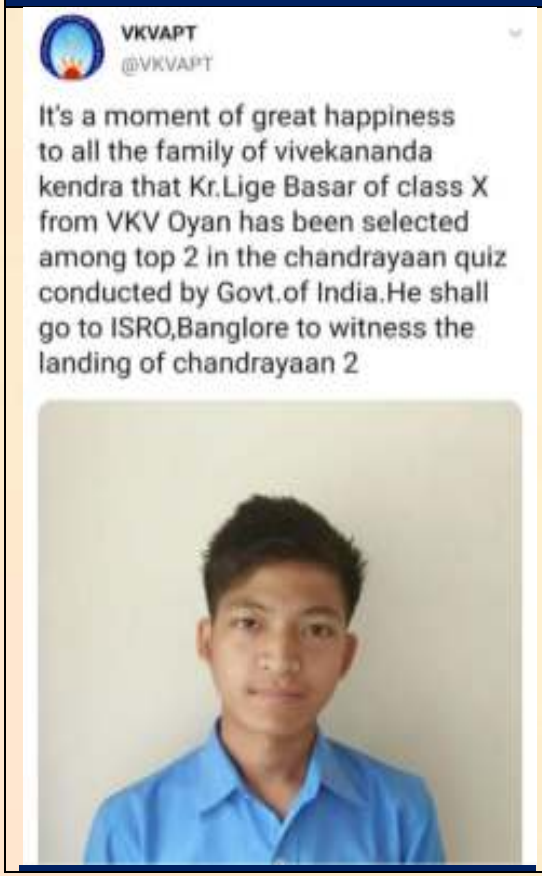

चंद्रयान 2 की लैंडिंग के साक्षी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ कुमार लीगे बासार, विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय, ओयान का विद्यार्थी।

http://www.vkspv.org

स्वास्थ्य क्षेत्र में विवेकानन्द केन्द्र का सेवा कार्य

स्वास्थ्य सेवा के अंतर्गत विवेकानन्द केन्द्र द्वारा तीन अस्पताल, दो ओपीडी क्लीनिक और पांच स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

3,216 इनडोर रोगी, **1,59,664** आउटडोर रोगी, **955** शल्य उपचार, **110** ग्राम समाहित।

विके भारत ओमान रिफाइनरी लिमिटेड अस्पताल, बीना, मध्य प्रदेश : स्थापना–2008

इंडियन ऑयल कंपनी लिमिटेड विके अस्पताल, पारादीप, ओडिशा : स्थापना - 2012

विके नुमालीगढ़ रिफाइनरी लिमिटेड अस्पताल, नुमालीगढ़, असम : स्थापना - 1997

मातृ एवं शिशु जागरूकता कार्यक्रम

विश्व स्वास्थ्य दिवस कार्यक्रम

मोबाइल चिकित्सा शिविर

https://www.vkborl.org

http://www.vknrlh.co.in

https://www.vkiocl.org

ग्रामीण और जनजातीय कल्याण गतिविधियां और कौशल विकास प्रकल्प

- अरुण ज्योति
- ओडिशा सेवा प्रकल्प
- विवेकानन्द केन्द्र प्रशिक्षण व सेवा प्रकल्प
- ग्राम विकास प्रकल्प
- प्राकृतिक संसाधन विकास प्रकल्प
- कौशल विकास प्रकल्प

समाहित गांवों की संख्या 243

स्वास्थ्य शिविर 334 तथा नेत्र शिबिर 38, कुल लाभार्थी 39,364

अरुण ज्योति – अरुणाचल प्रदेश

चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों से **20,119** लोग लाभान्वित हुए; सिलाई इकाइयाँ, प्रशिक्षण शिविर, बालवाड़ी, आनंदालय, इगनाइटेड यूथ फोरम और उत्सव।

इगनाइटेड यूथ फोरम

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

विवेकानन्द केन्द्र प्रशिक्षण व सेवा प्रकल्प – पिम्पलद, महाराष्ट्र

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

विद्यार्थियों के लिए वाचनालय

मलखंब

https://www.vkarunjyoti.org

https://www.vkpsp.org

ग्रामीण विकास कार्यक्रम – (विके ग्राविका)

तमिलनाडु के दक्षिणी छह जिले - कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली, तेनकासी, तूतुकुड़ी, रामनाड और विरुधुनगर।

छात्रों के लिए बालवाड़ी, चिकित्सा शिविर, सिलाई इकाइयां, अमृत सुरभि, वृद्धा दत्तक ग्रहण, दीप पूजा, अन्न पूजा, सांस्कृतिक गतिविधियों से कुल **88,040** लाभान्वित हुए।

दीप पूजा

सिलाई इकाई

चिकित्सा शिविर

बालवाडी

अन्न पजा विके-ग्राविका

https://www.vkrdp.org

प्राकृतिक संसाधन विकास प्रकल्प – तमिलनाडु

पर्यावरण के अनुकूल विनिर्माण तकनीकी, जल प्रबंधन, जैविक खेती, समग्र स्वास्थ्य और नवीकरणीय ऊर्जा के कार्यक्रमों से 3,757 लोग लाभान्वित हुए।

फेरो-सीमेंटटेक्नोलॉजी ट्रेनिंग

ओडिशा सेवा प्रकल्प – ओडिशा

आनंदालय, दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम, कम्प्यूटरसाक्षरता, मोबाइल चिकित्सा इकाई और पुस्तकालय से 6774 लोग लाभान्वित हुए।

आनंदालय

चिकित्सा शिविर

https://www.vknardep.org

https://www.greenrameswaram.org

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंदजी का सम्बोधन 26 दिसम्बर, 2019

श्री ए. बालकृष्णनजी,

उपाध्यक्ष, विवेकानन्द शिला स्मारक और विवेकानन्द केन्द्र, विशिष्ट अतिथिगण,

देवियों और सज्जनों,

1. आप सभी को मेरी शुभकामनाएं! मैं विवेकानन्द शिला स्मारक और विवेकानन्द केन्द्र में आकर बहुत धन्य अनुभव कर रहा हूँ क्योंकि यहां आना निःसंदेह एक बहुत ही विशेष तीर्थयात्रा है। हम एक ऐसे स्थान पर एकत्रित हुए हैं जो निरंतर अत्यंत सकारात्मक स्पंदन उत्सर्जित करता रहा है। विवेकानन्द शिला स्मारक और विवेकानन्द केन्द्र उन विरले स्थानों में से है जो प्राकृतिक रूप से एक विलक्षण नीरवता से संपन्न है। यह अशांत मन को चिरस्थायी प्रश्नों पर विचार करने हेतु प्रेरित करता है।

2. भारत माता के चरणों में स्थित इस शिला की यह आध्यात्मिक शक्ति ही स्वामी विवेकानन्द को उनके आंतरिक शांति की खोज में कन्याकुमारी तक खींच लायी थी। १२७ वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर, 1892 को स्वामी विवेकानन्द ने उस स्थान पर, जहां आज शिला स्मारक स्थित है, गहन ध्यान प्रारंभ किया था। स्वामीजी ने इस स्थान पर प्रबोधन प्राप्त कर एक अद्वितीय आध्यात्मिक क्रांति को जन्म दिया। वह किसी की व्यक्तिगत मुक्ति हेतु नहीं अपितु मातृभूमि के आध्यात्मिक मूल्यों को पुनः जागृत करने और जनमानस की सेवा हेतु थी। कुछ ही दिनों पूर्व मुझे संसद में स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित एक नाटक देखने का अद्भुत अनुभव प्राप्त हुआ और मैं उनके आत्मसिद्धि पर्यंत के क्रमिक विकास से मंत्रमुग्ध हो गया था।

3. इस संदर्भ में उनके 19 मार्च, 1894 को लिखे एक पत्र का स्मरण हो आता है, जिसमें स्वामीजी ने उनकी योजनाओं के विषय में लिखा था। उन्होंने निःस्वार्थी संन्यासियों के गांव-गांव जाकर जनमानस को शिक्षित करने और उनकी परिस्थितियों को सुधार करने हेतु कार्य करने का सपना देखा था।

उन्होंने लिखा था, "हम एक राष्ट्र के रूप में अपनी अस्मिता खो चुके हैं और यही भारत में हो रहे सारे क्षतियों का कारण है। हमें राष्ट्र को उसकी खोई अस्मिता को लौटाना होगा और जनमानस को ऊपर उठाना होगा।"

4. कन्याकुमारी के अनुभव के एक वर्ष के भीतर ही स्वामीजी ने 11 सितम्बर, 1893 के ऐतिहासिक दिन को शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में उनका युग प्रवर्तक उद्बोदन दिया था।

उन्होंने विश्वभर से आए धर्मगुरुओं की सभा में कहा कि उन्हें गर्व है वे एक ऐसे धर्म से हैं जिसने विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का संदेश दिया।

5. जब स्वामीजी की जन्म शताब्दी 1963 में मनायी जा रही थी, तब कन्याकुमारी के लोगों ने उस स्थान पर एक स्मारक बनाने का विचार किया जहां वह अज्ञात संन्यासी आधुनिक युग का एक महानतम आध्यात्मिक गुरु बना।

लगभग 650 कुशल कारीगर और कर्मचारी छः वर्ष दिन-प्रतिदिन निरंतर परिश्रम करते रहे। उन्होंने स्मारक को कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और समर्पण

का भी प्रतीक बनाया। विवेकानद शिला स्मारक का उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी द्वारा 2 सितम्बर, 1970 को किया गया था। पिछले पचास वर्षों में इसने अनगिनत आगंतुकों, विशेषकर युवाओं को उच्चत्तम आदर्श हेतु प्रेरित किया है।

6. मुझे विश्वास है कि आप में से अनेक स्मारक के निर्माण पूर्व अभियान से परिचित होंगे। यह स्मारक श्री एकनाथजी रानडे के अथक परिश्रम से ही सम्भव हो सका जिन्होंने संपूर्ण राष्ट्र को इस कार्य हेतु संगठित कर कार्य-प्रवृत किया।

7. स्वामी विवेकानन्द के एक सुयोग्य अनुयायी की तरह एकनाथजी ऋषीतुल्य जीये और भारत की आध्यात्मिक प्रतिभा को पुनःजीवित करने के कार्य हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया। इस हेतु उन्होंने उनके विख्यात संगठनात्मक कौशल को कार्य में लगाया। 'कर्मयोगी' एकनाथजी ने एक व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम आयोजित कर लाखों लोगों को उसमें सहभागी बनाया था। सामान्य जन के एक-एक रुपये के अल्प योगदान से इस कार्य हेतु निधि संग्रह हुआ। वे सांसदों से भी मिले और उनमें से 323 सांसदों को इस कार्य के समर्थन की अपील पर हस्ताक्षर के लिए मनाया। इस भव्य स्मारक को सच्चे अर्थों और आकांक्षाओं से राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा देने हेतु उन्होंने राजनीतिक या धार्मिक सीमाओं से परे जाकर समर्थकों को संगठित किया।

8. एकनाथजी स्वामीजी की स्मृति को एक ग्रेनाइट के भवन तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे मानते थे कि स्वामीजी का वास्तविक स्मारक उन लोगों के हृदय में होगा जो राष्ट्र को सर्वोपरी मानकर दरिद्रों की सेवा करेंगे। इस उद्धेश्य की पूर्ति हेतु 7 जनवरी, 1972 को विवेकानन्द केन्द्र की स्थापना हुई, जो अब सेवा को समर्पित एक विशाल संगठन में विकसित हो गया है। विवेकानन्द केन्द्र भी शीघ्र ही उसके 50 वर्ष का उत्सव मनाएगा।

9. इस वर्ष 2 सितम्बर से हमने शिला स्मारक के उद्घाटन के 50 वर्ष के उत्सव प्रारंभ किए। उस दिन मैंने 'एक भारत विजयी भारत' संपर्क कार्यक्रम इस नाम के कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विवेकानन्द केन्द्र की स्वामी विवेकानन्द के संदेश को भारत के कोने-कोने तक प्रसारित करने की योजना है। मुझे विश्वास है कि वह अधिकाधिक लोगों को यह सत्य समझाने में सफल होगी कि विवेकानन्द शिला स्मारक वह स्थान है जहां अनेक विविधताएं मिलकर एक शक्तिशाली आध्यात्मिक केन्द्र बनीं। भारत को बहुधा कश्मीर से कन्याकुमारी तक विस्तृत ऐसा वर्णित किया जाता है। एक प्रचंड हिमालय की गोद में है और दूसरे की गोद में यह

भव्य स्मारक है। दोनों, हिमालय और विवेकानन्द शिला स्मारक, इस भूमि के निवासियों को उनके क्षुद्र व्यक्तिगत पहचान के क्षितिज को विस्तारित करने की आवश्यकता का स्मरण कराते हैं।

दोनों निरन्तर हमें लौकिक स्तर से ऊपर उठकर उच्चतर स्तर के जीवन पर जाने का आह्वान करते हैं। अनावृत प्रकृति पर भव्यता से एकाकी प्रतिष्ठित यह शिला स्मारक वह परम दीपस्तम्भ है जो हमारे जहाजों को अशांत समुद्रों के बीच से हमारे आध्यात्मिक निवास तक निरंतर मार्गदर्शन करता रहेगा।

11. स्वामी विवेकानन्द का जीवन और कार्य इस भूमि को आनेवाले अनेक वर्षों तक निरन्तर प्रेरणा देता रहे, यही प्रार्थना!

धन्यवाद,

जय हिन्द !

प्रकाशन – साहित्य सेवा

विवेकानन्द केन्द्र प्रकाशन द्वारा 17 भाषाओं में साहित्य उपलब्ध हैं : हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, असमिया, बंगाली, आदी, बोडो, डिमासा, कन्नड़, कर्बी, मलयालम, मणिपुरी, ओडिया, पंजाबी। 10 केन्द्रों के माध्यम से पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।

चेन्नई, जोधपुर, गुवाहाटी, मैसूरु, भुवनेश्वर, कोलकाता, हैदराबाद, वडोदरा, कोडंगल्लूर, पुणे और सोलापुर।

17 भाषाओं में 642 शीर्षक, 7 पत्रिकाएं, 31072 सदस्य।

https://prakashan.vrmvk.org

प्रकाशन – साहित्य सेवा

अंग्रेजी और मराठी में
73,965 दिन-बोधिनी और
30,000 दिन-दार्शिकाएं
प्रकाशित किए गए।

11 सार्वजनिक कार्यक्रम /
पुस्तक विमोचन कार्यक्रम।
1307 नागरिक वार्ता / सेमिनार
में सहभागी हुए।

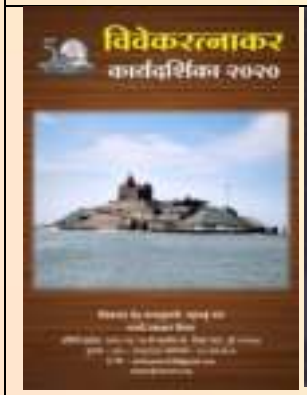

Book release by VK Marathi Prakashan, Pune

Book release by VK Hindi Prakashan, Jodhpur

http://ebook.vkendra.org

http://emag.vkendra.org

विवेकानन्द केन्द्र – संस्थान एवं शोध संस्थान

ये संस्थान समाज के एक विशेष वर्ग की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं अथवा किसी विशेष या उससे संबंधित मुद्दों से संबंधित है। ये स्थानीय जनजातियों से लेकर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों तक, अथवा स्वामी विवेकानन्द द्वारा परिकल्पित मानवीय उत्कृष्टता को बढ़ाने के लिए है; या समाज में वैदिक दृष्टि के विकास के लिए कार्यरत हैं।

- **विवेकानन्द केन्द्र संस्कृति संस्थान, गुवाहाटी ;**
- **विके वैदिक विजन फाउंडेशन, कोडंगलूर, केरल;**
- **विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (विआईएफ), नई दिल्ली ;**
- **विवेकानन्द केन्द्र ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट फॉर एक्सलन्स, सोलापुर ;**
- **विवेकानन्द केन्द्र कौशलम्, हैदराबाद ;**
- **विवेकानन्द केन्द्र एकेडमी फॉर इंडियन कल्चर, योगा एण्ड मैनेजमेंट, भुवनेश्वर;**
- **श्री रामकृष्ण महासम्मेलन आश्रम, नागदंडी।**

http://www.vkic.org

https://www.vifindia.org

https://www.vkaicyam.org

विवेकानन्द केन्द्र – संस्थान तथा शोध संस्थान

विवेकानन्द केन्द्र वैदिक विजन फाउंडेशन, कोडंगलूर,

इन संस्थानों द्वारा विविध गतिविधियां चलाई जाती है – इसके अंतर्गत भागवत पर प्रवचनों का आयोजन, भजनों का आयोजन, जनजातियों, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर वार्ता और संगोष्ठियों का समावेश है।

विवेकानन्द केन्द्र इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, गुवाहाटी

विवेकानन्द केन्द्र ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट फॉर एक्सलन्स, सोलापुर

विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली

https://srma.vkendra.org

https://www.vkvvf.org

https://vktie.vkendra.org

https://kaushalam.vkendra.org

विवेकानन्द केन्द्र की कार्यपद्धति – चार आयाम

योग वर्ग	स्वाध्याय वर्ग	संस्कार वर्ग	केन्द्र वर्ग
167 योग वर्ग, 2581 सहभागी	170 स्वाध्याय वर्ग, 2522 सहभागी	707 संस्कार वर्ग, 18180 सहभागी	189 केन्द्र वर्ग, 2774 सहभागी

उत्सव – गुरु पूर्णिमा

528 कार्यक्रम, 45,543 सहभागी।

उत्सव –विश्व बंधुत्व दिवस

549 कार्यक्रम, 63,224 सहभागी।

उत्सव – साधना दिवस

350 कार्यक्रम, 37,749 सहभागी।

उत्सव – गीता जयन्ती

307 कार्यक्रम, 40,839 सहभागी।

उत्सव – समर्थ भारत पर्व – विवेकानन्द जयन्ती

1,369 कार्यक्रम, 1,69,563 सहभागी।

विके ऐक्यम् (VK AICYAM), भुवनेश्वर का उद्घाटन

12 जनवरी, 2020 को विवेकानन्द केन्द्र एकेडमी फॉर इंडियन कल्चर, योगा एण्ड मैनेजमेंट, भुवनेश्वर का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान, प्रज्ञानन्द मिशन के अध्यक्ष परमहंस प्रज्ञानानन्द, रामकृष्ण मठ, भुवनेश्वर के अध्यक्ष स्वामी आत्मप्रभानन्द तथा
विवेकानन्द केन्द्र के उपाध्यक्ष मा. बालकृष्णनजी और मा. निवेदिता भिडे उपस्थित थे।

एक भारत - विजयी भारत

एक भारत - विजयी भारत – विवेकानन्द केन्द्र के अधिकारी गण सर्वप्रथम माननीय राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री के साथ क्रमशः 2, 3 और 4 सितम्बर, 2019 को सम्पर्क किया।

एक भारत - विजयी भारत

राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र के साथ विके राजस्थान के कार्यकर्ता चमू।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस के साथ विके महाराष्ट्र के कार्यकर्ता चमू।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के साथ विके उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ता गण।

बिहार के राज्यपाल श्री फागु चौहान के साथ विके बिहार के कार्यकर्ता चमू।

ओडिसा के पटबारी ग्राम से आनंदालय आचार्य की दादी ने विवेकानन्द (शिला स्मारक के निर्माण के लिए रु. 1 / - दान दिया।

विके पंजाब के कार्यकर्ता चमू के साथ पंजाब के राज्यपाल श्री वी.पी. सिंह बदनौर।

फरवरी 2020 तक कुल सम्पर्क : 50,163

https://sampark.vrmvk.org

श्री तंगराजजी ने 16,857 किमी की यात्रा 3 महीने और 9 दिनों में पूरी कर "विवेकानन्द शिला स्मारक - एक भारत - विजयी भारत" का सन्देश सम्पूर्ण भारत में दिया।

विवेकानन्द केन्द्र वैदिक विजन फाउंडेशन की निदेशक माननीय डॉ. लक्ष्मी कुमारी दीदी के साथ श्री थंगराज, साथ हैं कोडंगलूर के अन्य कार्यकर्तागण, केरल

श्री तंगराजजी की लगभग 16 हजार किलोमीटर की यात्रा विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी से भारतमाता के आशीर्वाद के साथ शुरू हुई। इस अवसर पर उपस्थित केन्द्र महासचिव माननीय भानुदासजी, कोषाध्यक्ष माननीय हनुमन्तरावजी और अन्य कार्यकर्ता।

श्री तंगराज विकेवि कल्लूबालू चमू के साथ तथा कल्लूबालु के कार्यकर्तागण, बेंगलुरु

दिव्यांग श्री तंगराज ने तीन पहिया वाहन से प्रवास करते हुए भारत के सभी राज्यों में "एक भारत विजय भारत" का संदेश दिया।

भारत के प्रधानमंत्री - 1 मार्च, 2019 को

रामायणम् दर्शनम्' विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में

रामायण दर्शनम् में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदीजी।

विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदीजी का स्वागत करते हुए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी का अभिप्राय आगन्तुक पुस्तिका में -

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'

विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संस्थान द्वारा मंगोलिया में संवाद III का आयोजन किया गया।

विवेकानन्द केन्द्र की उपाध्यक्षा निवेदिता भिडे और
विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के चेयरमैन
श्री एस. गुरुमूर्ति ने श्रोताओं को सम्बोधित किया।

https://samvad-vifindia.org

पुरस्कार और उपलब्धियां

डॉ. एम. लक्ष्मी कुमारी दीदी, निदेशक विवेकानन्द केन्द्र - वैदिक विजन फाउंडेशन, को मनोरमाथमपुरट्टी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मा. निवेदिता भिड़े, उपाध्यक्ष,
विवेकानन्द केन्द्र को 'शिक्षा भूषण' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान, डोंबिवली ने विवेकानन्द केन्द्र के संयुक्त महासचिव मा. प्रवीण दाभोलकर को "स्वामी विवेकानन्द पुरस्कार-2020" से सम्मानित किया।

श्रद्धांजलि - सेवा और समर्पण के लिए जिन्होंने जीवन जिया, और संसार को उत्तम बनाने के लिए अपना योगदान दिया।

- **स्वामी भूमानन्दजी** - अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, पुणे
- **डॉ. श्री श्री श्री शिवकुमार स्वामीगलु** - सिद्धगंगा मठ, तुमकुरु
- **श्री आई.पी. गुप्ताजी** – केन्द्र के प्रबंध समिति के सदस्य। अंडमान के पूर्व उपराज्यपाल।
- **श्री देवेंद्र स्वरूपजी** - हिन्दू विचारक, केन्द्र के जनरल बॉडी के सदस्य।
- **श्री विष्णु हरि डालमिया** - पूर्व अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद
- **श्री जॉर्ज फर्नांडीज** - पूर्व रेल मंत्री, रक्षा मंत्री
- **श्री हरि शंकर अग्रवाल** - विवेकानन्दपुरम् में डिस्पेंसरी बिल्डिंग के दानदाता।
- **श्री मनोहर पर्रिकर** - पूर्व रक्षा मंत्री, गोवा के मुख्यमंत्री
- **श्री रंगनाथएल. कुलकर्णी** - महाराष्ट्र प्रान्त संचालक
- **श्री राम काशलकर** – स्थानिक जोधपुर नगर
- **श्री महेंद्र कुमार लोढ़ा** - नगर संचालक, जोधपुर
- **श्री पी. जी. पटेल** - अहमदाबाद नगर संचालक
- **स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि** - माननीय एकनाथजी और विवेकानन्द केन्द्र से निकटता से जुड़े, पद्म भूषण से सम्मानित, ज्योतिर्मठ उपपीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य।
- **स्वामी तत्त्वबोधानन्द** - स्वामी दयानन्दजी के शिष्य, पुदुचेरी के वेदांत विद्वान, पहले विके मदुरै से जुड़े थे।
- **श्री बी.एम. खेतान** - वयोवृद्ध उद्योगपति, कोलकाता
- **श्री बी.के. बिड़ला** - वयोवृद्ध उद्योगपति, कोलकाता
- **श्री के. नागेश्वर राव** - सामान्य निकाय सदस्य, हैदराबाद
- **श्री रॉबिन बेजबरुआ**, नगर संचालक, शिवसागर
- **सुश्री शीला दीक्षित** - अध्यक्ष, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी
- **श्रीमती सुषमा स्वराज** - भारत के पूर्व विदेश मंत्री
- **श्री अरुण जेटली** - भारत सरकार के वित्त और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री
- **श्री दिनेश कोड़ा** - मुंगेर के भाजपा के एससी / एसटी सेल अध्यक्ष
- **डॉ. कोडेला शिवप्रसाद राव** - आंध्र प्रदेश के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और वरिष्ठ तेलुगु देशम पार्टी के नेता।
- **श्री राम जेठमलानी** - भारतीय वकील और राजनीतिज्ञ, पूर्व सांसद और कानून और न्याय मंत्री।
- **श्री बाबूलाल गौर** - मध्य प्रदेश के 16वें मुख्यमंत्री।
- **डॉ. प्रदीप शर्मा** - विवेकानन्द केन्द्र संस्कृति संस्थान, गुवाहाटी के पूर्व निदेशक।
- **डॉ. विवेक पोंक्षे** - एक महान विद्वान, प्रख्यात शिक्षाविद्, सच्चा शिक्षक, जो हमेशा उत्तर-पूर्वांचल से प्रेम करते थे, जिन्होंने विकेवि जयरामपुर में कार्य किया था और पुणे के ज्ञान प्रबोधिनी प्रशाला में पूर्व प्राचार्य थे।
- **श्री सी. थंगम** - स्टाफ का सदस्य और वीआरएमविके नाव का सारंग।
- **श्री कमल शर्मा** - एबीवीपी के पूर्व पूर्णकालिक कार्यकर्ता, पंजाब के भाजपा प्रधान।
- **श्री सुरेश प्रभावलकर** - इंदौर के वानप्रस्थी कार्यकर्ता, विके हिन्दी प्रकाशन
- **श्री विलास कुलकर्णी** - केन्द्र कार्यकर्ता
- **प्रो. ए. सी. भगवती** - अनुसंधान परिषद सदस्य, विकेआईसी, अरुणाचल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति
- **श्री ए.के. सिंह** - AURO विश्वविद्यालय
- **श्री कैलाश जोशी** - मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री।
- **स्वामी विमलानन्दसरस्वती** - स्वामी शिवानन्द आश्रम, हृषिकेश

विवेकानन्द केन्द्र मुख्यालय, विवेकानन्दपुरम्, कन्याकुमारी

दर्शनार्थी

परिव्राजक संन्यासी प्रदर्शनी - 19,761

उत्तिष्ठत!जाग्रत!! प्रदर्शनी - 29,043

गंगोत्री- 3,049

ग्रामोदय पार्क - 1,112

रामायण दर्शनम् - 1,42,821

विवेक चिकित्सालय - 7,561

योग, अध्यात्म, कार्यकर्ता तथा आचार्य प्रशिक्षण शिविर में कुल 850 सहभागी।

विवेकानन्द शिला स्मारक के दर्शनार्थी – 18,83,161

यात्री निवास में ठहरनेवाले प्रवासियों की संख्या - 1,35,259

विवेकानन्द शिला स्मारक के अति विशिष्ट दर्शनार्थी

श्री रामनाथ कोविंद, भारत के राष्ट्रपति	25 दिसम्बर, 2019
श्री नितिन गडकरी, केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री	8 जून, 2019
डॉ. नंद कुमार, अध्यक्ष SC / ST आयोग	10 जनवरी, 2020
श्रीमती बेबी रानी मौर्य, राज्यपाल, उत्तराखंड	28 दिसम्बर, 2019
श्री शिवराज सिंह चौहान, पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश	10 अक्टूबर, 2019
श्री तरुण विजय, पूर्व सांसद, राज्यसभा	25 अक्टूबर, 2019
श्री उमेश लाहोटी, न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय, भारत	16 मई, 2019
श्री विजय कुमार, आध्यात्मिक सलाहकार, भारत के राष्ट्रपति, आर.पी. भवन, नई दिल्ली	20 मई, 2019
श्री मनसुखएल. मंडाविया, केंद्रीय नौवहन, रसायन और उर्वरक मंत्री	22 अक्टूबर, 2019
ए. एस. बेदी, लेफ्टिनेंट जनरल, भारतीय सशस्त्र बल, नई दिल्ली	14 दिसम्बर, 2019
माननीयजी. भास्करन, स्कूल शिक्षा युवा कल्याण और खेल विकास मंत्री, तमिलनाडु	6 सितम्बर, 2019

महासचिव की ओर से -

प्रिय पाठकगण,

देवी कन्याकुमारी के चरणों से नमस्कार!

आप सभी जानते हैं कि विवेकानन्द केन्द्र एक अखिल भारतीय संगठन है और पूरे देश में विभिन्न प्रकार की सेवा गतिविधियों में संलग्न है। विवेकानन्द केन्द्र समाचार में वर्ष 2019-20 की अवधि में इस तरह के कार्यों के विस्तार का विवरण है।

ये सेवा कार्य आप सभी के तन-मन-धन के योगदान से बढ़ रहा है। महामारी के दौरान स्वच्छता, विभिन्न स्थानों पर भोजन तैयार कर वितरित किए गए और प्रार्थना की गई। इसने निश्चित रूप से हमें अधिक से अधिक कार्य करने की बहुत ऊर्जा प्रदान की है। सामान्य समय के दौरान भी "सर्वे संतु निरामया" में व्यक्त किए गए विचारों का स्मरण रखना चाहिए। हम सभी को अपने और समाज को सभी चिन्ताओं, समस्याओं से मुक्त करना है।

केन्द्र का कार्य बढ़ रहा है और इसे अधिक मानवीय शक्ति की आवश्यकता है। हम सभी से आह्वान करते हैं कि आप अपने सम्पर्क में आए नागरिकों को केन्द्र से जुड़ने के लिए प्रेरित करें और स्वामीजी के कार्य के लिए अपना बहुमूल्य समय दें। स्वामीजी ने कहा था: **"भारत तभी जागेगा, जब विशाल हृदयवाले सैकड़ों स्त्री-पुरुष अपने भोग-विलास और सुख की सभी इच्छाओं को त्याग कर उन करोड़ों भारतीयों के कल्याण के लिए सचेष्ट होंगे, जो दरिद्रता तथा मूर्खता के अगाध सागर में निरन्तर नीचे डूबते जा रहे हैं।"**

विवेकानन्द शिला स्मारक के इस 50 वें वर्ष में, आइए हम इसकी गाथा से सभी को प्रेरित और उन्हें तैयार करें जिससे कि वे भारत के उत्थान के लिए स्वयं को समर्पित कर सकें।

हम सभी पाठकों से आह्वान करते हैं कि भारतमाता को जगत् गुरु बनाने के इस पवित्र कार्य में सम्मिलित होकर स्वामी विवेकानन्द के ध्येय का अनुभव करें।

हम इस श्रेष्ठ कार्य के लिए आपकी हर तरह की सहायता और सहयोग की प्रतीक्षा में!

प्रार्थना के साथ,
सादर

(भानुदास धाक्रस)
महासचिव

परिपोषक बनिए
https://www.vrmvk.org/content/bepatron-

सेवव्रती योजना
https://www.vrmvk.org/content/sevavratiyojana

शिविर में सहभागी होकर
https://www.vrmvk.org/camps

शिक्षक के रूप में जुड़कर
https://www.vrmvk.org/join-as-a-teacher

प्रकाशन
https://www.vrmvk.org/publication

निवास
https://yatra.vrmvk.org/

अभी दान कीजिए
https://www.vrmvk.org/my-contributiondonation

केन्द्र की शाखाएं
https://www.vrmvk.org/vivekanandakendra-centers

मुख्य वेबसाइट
https://www.vrmvk.org/
email: info@vkendra.org

https://www.vrmvk.org/vks202

प्रिय परिपोषक, दानदाताओं, पत्रिका सदस्य, शुभचिंतकों-

कृपया अपने संचार विवरण (ईमेल / मोबाइल / व्हाट्सएप / आदि) को अपडेट करें ताकि हम आपको डिजिटल पत्रिका, योग और बच्चों के शिविरों के बारे में उपयोगी जानकारी और आपके और आपके परिवार के लिए उपयोगी गतिविधियों की जानकारी को भेजकर बेहतर सेवा प्रदान कर सकें। इन समयों में और भविष्य में भी, ऑनलाइन संचार सबसे शक्तिशाली माध्यम होगा इसलिए विश्व को एक साथ जोड़ने के हमारे यज्ञ में डिजिटल रूप से भी हम जुड़े।

कृपया यहाँ से अपडेट करें:

http://update.vkendra.org

विवेकानन्द केन्द्र सोशल मिडिया में

YouTube

Main Channel https://youtube.com/vrmvk	**Activity Channel** https://youtube.com/vkactivity
Padawali https://youtube.com/padawali	**SahityaSeva** https://youtube.com/vkprakashan

Facebook Page
https://fb.com/VivekanandaKendraKanyakumari

Twitter:
https://twitter.com/vkendra

Flickr
https://flickr.com/vivekanandakendra

Instagram
https://instagram.com/vrmvk

Swami Vivekananda Daily Quotation (Hindi & Eng) Telegram Channel : https://t.me/dailyvivek
VK Update Telegram Channel : https://t.me/vkendra

Blog : https://blog.vrmvk.org

आपका योगदान महत्वपूर्ण है -

विवेकानन्द केन्द्र सभी को समाज उपयोगी सेवा कार्य में सहभागी होने का अवसर प्रदान करता है।

परिपोषक	बच्चों की शिक्षा	सामान्य
परिपोषक बनें और केन्द्र के जीवनव्रती कार्यकर्ताओं के योगक्षेम वहन करने का संतोष पायें।	आगामी पीढ़ी को शिक्षित करनें में सहायता करें - उत्तरपूर्वांचल एवं अन्य स्थानों के बच्चे आपकी सहायता चाहते हैं। आप उनका जीवन बना सकते हैं।	नियमित सेवा गतिविधियों प्रकल्प, राहत कार्य, जागरूकता शिबिर, स्वास्थ्य इत्यादि के आयोजन हेतु।
निर्माण कार्य	**कमरा प्रायोजित करें**	
विवेकानन्द केन्द्र उत्कृष्टता संस्थान। सोलापुर विवेकानन्द सभागृह कन्याकुमारी इत्यादि निर्माण कार्यों हेतु आपका आर्थिक सहाय्य।	विवेकानन्द केन्द्र की कक्ष प्रायोजन योजना के अंतर्गत विवेकानन्दपुरम कन्याकुमारी में निवास-कक्ष प्रायोजित करें। विवेकानन्द शिला स्मारक पर भी दानदाताओं के नाम अंकित किये जाते हैं।	

You can donate from here-
http://donate.vkendra.org/

भारत, पुनः उठ रहा है!

भारत के पुनर्निर्माण की इस रोमांचकारी
यात्रा में सहयात्री बनें !

'विवेकानन्द केन्द्र' से जुड़ें -
मनुष्य-निर्माण राष्ट्र-पुनरुत्थान
के प्रति समर्पित
एक अध्यात्म प्रेरित सेवा संगठन

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी
विवेकानन्दपुरम, कन्याकुमारी
तमिलनाडु - ६२९ ७०२ **www.vrmvk.org**

https://www.vrmvk.org